



Mr.

25 Sep 2025

12:51 PM

Delhi

Model: Web-MyKundli

Order No: 119556001

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 25/09/2025
दिन _____: गुरुवार
जन्म समय _____: 12:51:00 घंटे
इष्ट _____: 16:39:41 घटी
स्थान _____: Delhi
देश _____: India

अक्षांश _____: 28:39:00 उत्तर
रेखांश _____: 77:13:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:21:08 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 12:29:52 घंटे
वेलान्तर _____: 00:08:19 घंटे
साम्पातिक काल _____: 12:47:20 घंटे
सूर्योदय _____: 06:11:07 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:13:58 घंटे
दिनमान _____: 12:02:50 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: शरद
सूर्य के अंश _____: 08:16:24 कन्या
लग्न के अंश _____: 04:04:42 धनु

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: धनु - गुरु
राशि-स्वामी _____: तुला - शुक्र
नक्षत्र-चरण _____: स्वाति - 4
नक्षत्र स्वामी _____: राहु
योग _____: वैधृति
करण _____: वणिज
गण _____: देव
योनि _____: महिष
नाड़ी _____: अन्त्य
वर्ण _____: शूद्र
वश्य _____: मानव
वर्ग _____: सर्प
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: वायु
जन्म नामाक्षर _____: ता-तरुण
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: स्वर्ण - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: तुला



FUTUREPOINT
Astro Solutions



पंचांग

दादा का नाम _____ :
 पिता का नाम _____ :
 माता का नाम _____ :
 जाति _____ :
 गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1947	आश्विन	3
पंजाबी	संवत : 2082	आश्विन	10
बंगाली	सन् : 1432	आश्विन	8
तमिल	संवत : 2082	पुरुटासी	9
केरल	कोल्लम : 1201	कन्नी	9
नेपाली	संवत : 2082	आश्विन	9
चैत्रादि	संवत : 2082	आश्विन	शुक्ल 3
कार्तिकादि	संवत : 2082	आश्विन	शुक्ल 3

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 3
 तिथि समाप्ति काल _____ : 07:06:20
 जन्म तिथि _____ : 4
 सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : स्वाति
 नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 19:08:36 घंटे
 जन्म योग _____ : स्वाति
 सूर्योदय कालीन योग _____ : वैधृति
 योग समाप्ति काल _____ : 21:53:21 घंटे
 जन्म योग _____ : वैधृति
 सूर्योदय कालीन करण _____ : गर
 करण समाप्ति काल _____ : 07:06:20 घंटे
 जन्म करण _____ : वणिज
 भयात _____ : 51:26:19
 भभोग _____ : 67:10:19
 भोग्य दशा काल _____ : राहु 4 वर्ष 2 मा 13 दि

घात चक्र

मास _____ : माघ
 तिथि _____ : 4-9-14
 दिन _____ : गुरुवार
 नक्षत्र _____ : शतभिषा
 योग _____ : शुक्ल
 करण _____ : तैतिल
 प्रहर _____ : 4
 वर्ग _____ : गरुड़
 लग्न _____ : कन्या
 सूर्य _____ : कन्या
 चन्द्र _____ : धनु
 मंगल _____ : तुला
 बुध _____ : कर्क
 गुरु _____ : वृश्चिक
 शुक्र _____ : धनु
 शनि _____ : सिंह
 राहु _____ : मकर

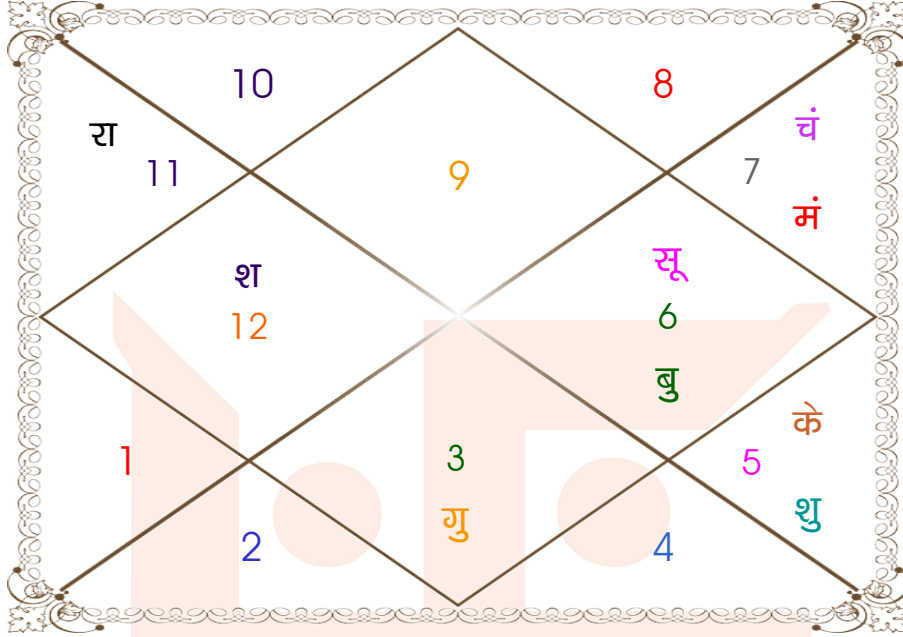


FUTUREPOINT
 Astro Solutions

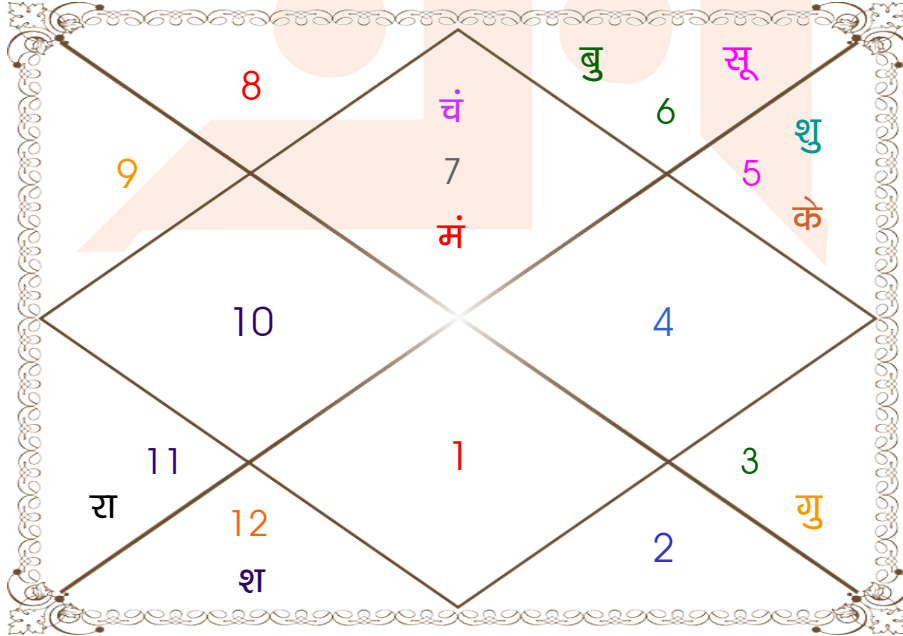


जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

श			गु
रा			
			के शु
ल		मं चं	बु सू

लग्न कुंडली

		श
गु		रा
शु के	चं मं	ल

विंशोत्तरी
राहु 4वर्ष 2मा 13दि
राहु

25/09/2025

10/12/2131

राहु	09/12/2029
गुरु	09/12/2045
शनि	08/12/2064
बुध	09/12/2081
केतु	08/12/2088
शुक्र	09/12/2108
सूर्य	10/12/2114
चन्द्र	09/12/2124
मंगल	10/12/2131

योगिनी
पिंगला 0वर्ष 5मा 18दि
पिंगला

25/09/2025

15/03/2026

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	25/09/2025
संकटा	22/02/2026
मंगला	15/03/2026



FUTUREPOINT
Astro Solutions



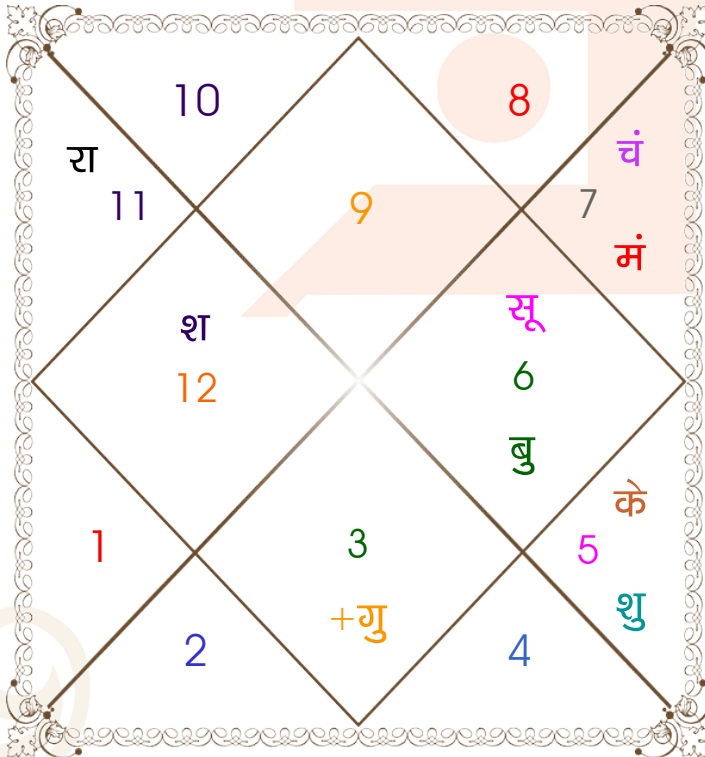
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			धनु	04:04:42	328:53:48	मूल	2	19	गुरु	केतु	चंद्र	---
सूर्य			कन्या	08:16:24	00:58:48	उ०फाल्गुनी	4	12	बुध	सूर्य	शुक्र	सम राशि
चंद्र			तुला	16:53:08	11:53:06	स्वाति	4	15	शुक्र	राहु	शुक्र	सम राशि
मंगल			तुला	07:47:14	00:40:30	स्वाति	1	15	शुक्र	राहु	राहु	सम राशि
बुध		अ	कन्या	17:41:30	01:40:23	हस्त	3	13	बुध	चंद्र	शनि	मूलत्रिकोण
गुरु			मिथु	27:30:49	00:08:06	पुनर्वसु	3	7	बुध	गुरु	शुक्र	शत्रु राशि
शुक्र			सिंह	12:51:21	01:13:35	मघा	4	10	सूर्य	केतु	बुध	शत्रु राशि
शनि	व		मीन	03:58:36	00:04:38	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	शनि	सम राशि
राहु	व		कुंभ	24:04:13	00:02:28	पू०भाद्रपद	2	25	शनि	गुरु	बुध	मित्र राशि
केतु	व		सिंह	24:04:13	00:02:28	पू०फाल्गुनी	4	11	सूर्य	शुक्र	बुध	शत्रु राशि
हर्ष	व		वृष	07:05:39	00:00:57	कृतिका	4	3	शुक्र	सूर्य	केतु	---
नेप	व		मीन	06:29:27	00:01:40	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	बुध	---
प्लूटो	व		मक	07:13:55	00:00:31	उत्तराषाढ़ा	4	21	शनि	सूर्य	केतु	---
दशम भाव			कन्या	18:38:59	--	हस्त	--	13	बुध	चंद्र	बुध	--

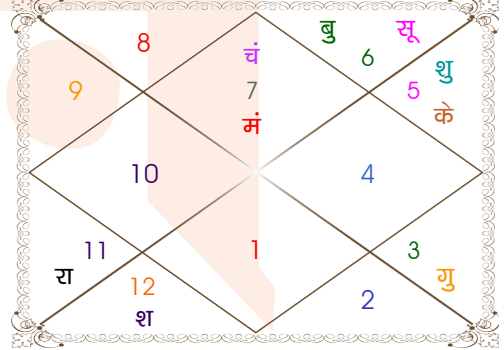
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:13:03

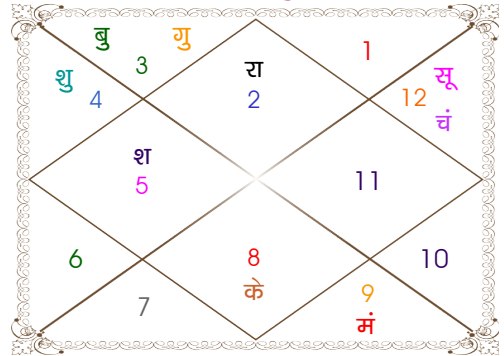
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	वृश्चिक 21:30:25	धनु 04:04:42
2	धनु 21:30:25	मकर 08:56:08
3	मकर 26:21:51	कुम्भ 13:47:33
4	मीन 01:13:16	मीन 18:38:59
5	मेष 01:13:16	मेष 13:47:33
6	मेष 26:21:51	वृष 08:56:08
7	वृष 21:30:25	मिथुन 04:04:42
8	मिथुन 21:30:25	कर्क 08:56:08
9	कर्क 26:21:51	सिंह 13:47:33
10	कन्या 01:13:16	कन्या 18:38:59
11	तुला 01:13:16	तुला 13:47:33
12	तुला 26:21:51	वृश्चिक 08:56:08

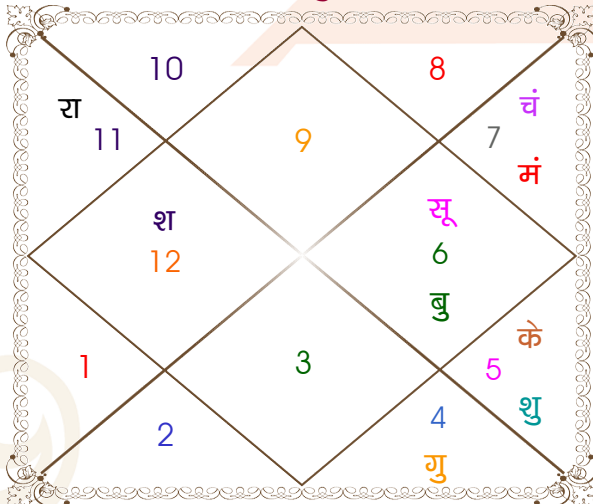
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	धनु	04:04:42
2	मकर	07:50:19
3	कुम्भ	14:28:30
4	मीन	18:38:59
5	मेष	17:11:40
6	वृष	11:21:32
7	मिथुन	04:04:42
8	कर्क	07:50:19
9	सिंह	14:28:30
10	कन्या	18:38:59
11	तुला	17:11:40
12	वृश्चिक	11:21:32

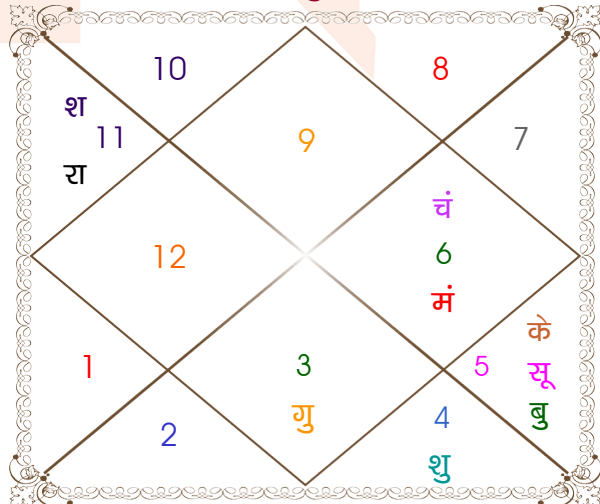
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा
शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा
आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पूर्वाफाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा

चलित कुंडली



भाव कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : राहु 4 वर्ष 2 मास 13 दिन

राहु 18 वर्ष 25/09/2025 09/12/2029	गुरु 16 वर्ष 09/12/2029 09/12/2045	शनि 19 वर्ष 09/12/2045 08/12/2064	बुध 17 वर्ष 08/12/2064 09/12/2081	केतु 7 वर्ष 09/12/2081 08/12/2088
00/00/0000	गुरु 27/01/2032	शनि 12/12/2048	बुध 07/05/2067	केतु 07/05/2082
00/00/0000	शनि 09/08/2034	बुध 22/08/2051	केतु 03/05/2068	शुक्र 07/07/2083
00/00/0000	बुध 14/11/2036	केतु 29/09/2052	शुक्र 04/03/2071	सूर्य 12/11/2083
00/00/0000	केतु 21/10/2037	शुक्र 30/11/2055	सूर्य 09/01/2072	चंद्र 12/06/2084
25/09/2025	शुक्र 21/06/2040	सूर्य 11/11/2056	चंद्र 09/06/2073	मंगल 08/11/2084
शुक्र 28/06/2026	सूर्य 09/04/2041	चंद्र 12/06/2058	मंगल 06/06/2074	राहु 27/11/2085
सूर्य 22/05/2027	चंद्र 09/08/2042	मंगल 22/07/2059	राहु 24/12/2076	गुरु 02/11/2086
चंद्र 20/11/2028	मंगल 16/07/2043	राहु 28/05/2062	गुरु 01/04/2079	शनि 12/12/2087
मंगल 09/12/2029	राहु 09/12/2045	गुरु 08/12/2064	शनि 09/12/2081	बुध 08/12/2088
शुक्र 20 वर्ष 08/12/2088 09/12/2108	सूर्य 6 वर्ष 09/12/2108 10/12/2114	चंद्र 10 वर्ष 10/12/2114 09/12/2124	मंगल 7 वर्ष 09/12/2124 10/12/2131	राहु 18 वर्ष 10/12/2131 00/00/0000
शुक्र 09/04/2092	सूर्य 29/03/2109	चंद्र 10/10/2115	मंगल 08/05/2125	राहु 22/08/2134
सूर्य 09/04/2093	चंद्र 28/09/2109	मंगल 10/05/2116	राहु 26/05/2126	गुरु 15/01/2137
चंद्र 09/12/2094	मंगल 03/02/2110	राहु 09/11/2117	गुरु 02/05/2127	शनि 22/11/2139
मंगल 08/02/2096	राहु 28/12/2110	गुरु 11/03/2119	शनि 10/06/2128	बुध 10/06/2142
राहु 08/02/2099	गुरु 16/10/2111	शनि 10/10/2120	बुध 07/06/2129	केतु 29/06/2143
गुरु 10/10/2101	शनि 27/09/2112	बुध 11/03/2122	केतु 03/11/2129	शुक्र 26/09/2145
शनि 09/12/2104	बुध 04/08/2113	केतु 10/10/2122	शुक्र 03/01/2131	00/00/0000
बुध 10/10/2107	केतु 10/12/2113	शुक्र 10/06/2124	सूर्य 11/05/2131	00/00/0000
केतु 09/12/2108	शुक्र 10/12/2114	सूर्य 09/12/2124	चंद्र 10/12/2131	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल राहु 4 वर्ष 2 मा 18 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - शुक्र	राहु - सूर्य	राहु - चंद्र	राहु - मंगल	गुरु - गुरु
25/09/2025	28/06/2026	22/05/2027	20/11/2028	09/12/2029
28/06/2026	22/05/2027	20/11/2028	09/12/2029	27/01/2032
00/00/0000	सूर्य 14/07/2026	चंद्र 07/07/2027	मंगल 13/12/2028	गुरु 23/03/2030
00/00/0000	चंद्र 10/08/2026	मंगल 08/08/2027	राहु 08/02/2029	शनि 24/07/2030
00/00/0000	मंगल 30/08/2026	राहु 29/10/2027	गुरु 31/03/2029	बुध 11/11/2030
00/00/0000	राहु 18/10/2026	गुरु 10/01/2028	शनि 31/05/2029	केतु 27/12/2030
00/00/0000	गुरु 01/12/2026	शनि 06/04/2028	बुध 24/07/2029	शुक्र 06/05/2031
25/09/2025	शनि 22/01/2027	बुध 23/06/2028	केतु 16/08/2029	सूर्य 14/06/2031
शनि 20/11/2025	बुध 09/03/2027	केतु 25/07/2028	शुक्र 19/10/2029	चंद्र 18/08/2031
बुध 25/04/2026	केतु 29/03/2027	शुक्र 24/10/2028	सूर्य 07/11/2029	मंगल 02/10/2031
केतु 28/06/2026	शुक्र 22/05/2027	सूर्य 20/11/2028	चंद्र 09/12/2029	राहु 27/01/2032
गुरु - शनि	गुरु - बुध	गुरु - केतु	गुरु - शुक्र	गुरु - सूर्य
27/01/2032	09/08/2034	14/11/2036	21/10/2037	21/06/2040
09/08/2034	14/11/2036	21/10/2037	21/06/2040	09/04/2041
शनि 21/06/2032	बुध 05/12/2034	केतु 04/12/2036	शुक्र 01/04/2038	सूर्य 06/07/2040
बुध 31/10/2032	केतु 22/01/2035	शुक्र 30/01/2037	सूर्य 20/05/2038	चंद्र 30/07/2040
केतु 24/12/2032	शुक्र 09/06/2035	सूर्य 16/02/2037	चंद्र 09/08/2038	मंगल 16/08/2040
शुक्र 27/05/2033	सूर्य 20/07/2035	चंद्र 16/03/2037	मंगल 05/10/2038	राहु 29/09/2040
सूर्य 12/07/2033	चंद्र 27/09/2035	मंगल 05/04/2037	राहु 28/02/2039	गुरु 07/11/2040
चंद्र 27/09/2033	मंगल 14/11/2035	राहु 26/05/2037	गुरु 08/07/2039	शनि 23/12/2040
मंगल 20/11/2033	राहु 18/03/2036	गुरु 11/07/2037	शनि 09/12/2039	बुध 02/02/2041
राहु 08/04/2034	गुरु 06/07/2036	शनि 03/09/2037	बुध 25/04/2040	केतु 20/02/2041
गुरु 09/08/2034	शनि 14/11/2036	बुध 21/10/2037	केतु 21/06/2040	शुक्र 09/04/2041
गुरु - चंद्र	गुरु - मंगल	गुरु - राहु	शनि - शनि	शनि - बुध
09/04/2041	09/08/2042	16/07/2043	09/12/2045	12/12/2048
09/08/2042	16/07/2043	09/12/2045	12/12/2048	22/08/2051
चंद्र 20/05/2041	मंगल 29/08/2042	राहु 25/11/2043	शनि 01/06/2046	बुध 30/04/2049
मंगल 17/06/2041	राहु 19/10/2042	गुरु 21/03/2044	बुध 03/11/2046	केतु 26/06/2049
राहु 29/08/2041	गुरु 04/12/2042	शनि 06/08/2044	केतु 06/01/2047	शुक्र 07/12/2049
गुरु 02/11/2041	शनि 27/01/2043	बुध 08/12/2044	शुक्र 09/07/2047	सूर्य 25/01/2050
शनि 18/01/2042	बुध 16/03/2043	केतु 29/01/2045	सूर्य 02/09/2047	चंद्र 17/04/2050
बुध 28/03/2042	केतु 05/04/2043	शुक्र 24/06/2045	चंद्र 02/12/2047	मंगल 13/06/2050
केतु 26/04/2042	शुक्र 01/06/2043	सूर्य 07/08/2045	मंगल 04/02/2048	राहु 08/11/2050
शुक्र 16/07/2042	सूर्य 18/06/2043	चंद्र 19/10/2045	राहु 18/07/2048	गुरु 19/03/2051
सूर्य 09/08/2042	चंद्र 16/07/2043	मंगल 09/12/2045	गुरु 12/12/2048	शनि 22/08/2051

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	7
भाग्यांक	7
मित्र अंक	2, 3, 6, 7
शत्रु अंक	4, 5, 8
शुभ वर्ष	25,34,43,52,61
शुभ दिन	रवि, गुरु, मंगल
शुभ ग्रह	सूर्य, गुरु, मंगल
मित्र राशि	मकर, मिथुन
मित्र लग्न	मीन, सिंह, तुला
अनुकूल देवता	लक्ष्मी
शुभ रत्न	पुखराज
शुभ उपरत्न	सुनहला, पीला हकीक
भाग्य रत्न	माणिक्य
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	पीत
शुभ दिशा	पूर्वोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प
दान अन्न	दाल चना
दान द्रव्य	घी



FUTUREPOINT
Astro Solutions

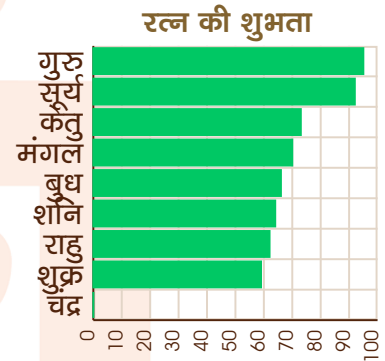


रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पुखराज	गुरु	95%	दम्पति, स्वास्थ्य, सुख
माणिक्य	सूर्य	92%	व्यावसायिक उन्नति, भाग्योदय
लहसुनिया	केतु	73%	भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति
मूंगा	मंगल	70%	धनार्जन, सन्तति सुख, कम खर्च
पन्ना	बुध	66%	व्यावसायिक उन्नति, दम्पति
नीलम	शनि	64%	सुख, धन, पराक्रम
गोमेद	राहु	62%	पराक्रम, सुख
हीरा	शुक्र	59%	भाग्योदय, शत्रु व रोग मुक्ति, धनार्जन
मोती	चंद्र	0%	हानि, दुर्घटना



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
राहु	09/12/2029	80%	0%	58%	66%	95%	66%	70%	75%	61%
गुरु	09/12/2045	98%	12%	77%	53%	100%	44%	64%	62%	73%
शनि	08/12/2064	80%	0%	58%	72%	95%	66%	77%	69%	61%
बुध	09/12/2081	98%	0%	70%	78%	95%	66%	64%	62%	73%
केतु	08/12/2088	80%	0%	77%	66%	95%	66%	52%	50%	86%
शुक्र	09/12/2108	80%	0%	70%	72%	95%	72%	70%	69%	80%
सूर्य	10/12/2114	100%	12%	77%	66%	100%	44%	52%	50%	61%
चंद्र	09/12/2124	98%	25%	70%	72%	95%	59%	64%	50%	61%
मंगल	10/12/2131	98%	12%	83%	53%	100%	59%	64%	50%	80%



FUTUREPOINT
Astro Solutions



साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	08/08/2029-05/10/2029 17/04/2030-31/05/2032	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	22/10/2038-05/04/2039 13/07/2039-28/01/2041 06/02/2041-26/09/2041	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	28/01/2041-06/02/2041 26/09/2041-11/12/2043 23/06/2044-30/08/2044	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	11/12/2043-23/06/2044 30/08/2044-08/12/2046	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	06/03/2049-10/07/2049 04/12/2049-25/02/2052	-----

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	27/05/2059-11/07/2061 13/02/2062-07/03/2062	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	30/08/2068-04/11/2070	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	04/11/2070-05/02/2073 31/03/2073-23/10/2073	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	05/02/2073-31/03/2073 23/10/2073-16/01/2076 11/07/2076-11/10/2076	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	15/01/2079-12/04/2081 03/08/2081-07/01/2082	-----

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	18/07/2088-31/10/2088 05/04/2089-19/09/2090 25/10/2090-21/05/2091	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	11/10/2097-02/05/2098 20/06/2098-26/12/2099 17/03/2100-16/09/2100	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	26/12/2099-17/03/2100 16/09/2100-03/12/2102	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	03/12/2102-29/11/2105	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	25/02/2108-29/07/2108 23/11/2108-17/02/2111	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया

फल

शुभ
शुभ
शुभ
अशुभ
शुभ

क्षेत्र

शत्रु व रोग मुक्ति
व्यावसाय
धनार्जन
व्यय
धन



FUTUREPOINT
Astro Solutions



साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल चन्द्रमा के साथ है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं परन्तु चन्द्र लग्न से मंगल का दोष अधिक नहीं माना जाता है अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे परन्तु स्वभाव में किंचित उग्रता का भाव उत्पन्न रहेगा। साथ ही मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में किंचित मात्रा में विलम्ब भी हो सकता है तथा यदा कदा विवाह संबंधी वार्तालापों में व्यवधान आएंगे परन्तु अन्ततोगत्वा आपको सफलता मिलेगी। पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा मानसिक शान्ति भी बनी रहेगी।

चन्द्रमा के साथ मंगल की युति होने से आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा साथ ही चतुर्थ भाव पर दृष्टि के कारण जीवन में आप भौतिक सुख संसाधन तथा जायदाद आदि भी प्राप्त करेंगे यद्यपि इसमें आपको थोड़ा परिश्रम अवश्य करना पड़ेगा। अष्टम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। स्वभाव से वे तेज हो सकती हैं परन्तु इसमें कोई विशेष परेशानी नहीं होगी। अष्टम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आप परिश्रम एवं पराक्रम से अपने सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगे तथा व्यवधानों एवं समस्याओं का दृढ़ता पूर्वक सामना करके उनका समाधान करेंगे।

अतः अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखमय एवं अनुकूल बनाने के लिए आपको किसी उचित मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिससे आपका मांगलिक दोष भंग हो जाय। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि तथा राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। इस दोष के भंग होने पर आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा इच्छित भौतिक सुख संसाधनों की प्राप्ति होगी साथ ही चल एवं अचल सम्पत्ति के भी स्वामी बनेंगे। आपका दाम्पत्य जीवन सुखमय एवं प्रसन्नता पूर्वक

व्यतीत होगा तथा धनऐश्वर्य से आप युक्त रहेंगे।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है ।
- नवम भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में सूर्य और मंगल के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें । रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं ।

आपकी कुण्डली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है । संभव है कि किसी शुभकार्य के



FUTUREPOINT
Astro Solutions



कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



ग्रह फल

सूर्य

दशमभाव में सूर्य हो तो जातक-प्रतापी, व्यवसाय कुशल, राजमान्य लब्ध-प्रतिष्ठ, राजमन्त्री, उदार, ऐश्वर्य सम्पन्न एवं लोकमान्य होता है।

कन्या राशि में रवि हो तो जातक लेखन कुशल, दुर्बल, शक्तिहीन, मन्दाग्निरोगी, व्यर्थवक्ता, साहित्य और कविता में रुचि, भाषाविद् -बुद्धिमान, पत्रकार एवं गणितज्ञ होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन के अधिकांश महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपकी उन्नति के लिए अपना पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही व्यापार तथा आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहयोग से आप सफलता अर्जित कर सकेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु वे शीघ्र ही समाप्त हो जाएंगे। इसके साथ ही आप जीवन में उनको आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे तथा सुख दुःख में उनको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करेंगे।

चन्द्र

ग्यारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक गुणी, चंचलबुद्धि, सन्तति और सम्पत्ति से युक्त, सुखी, यशस्वी, लोकप्रिय, दीर्घायु, मन्त्रज्ञ, परदेशप्रिय एवं राज्यकार्यदक्ष होता है।

तुला राशि में चन्द्रमा हो तो जातक दीर्घदेही, आस्तिक, अन्नदाता, धनवान्, जमींदार, कुशाबुद्धिवाला, चतुर, उच्चाकांक्षाओं से रहित, सन्तोषी एवं परोपकारी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति एकादश भाव में है। अतः माता के आप सदैव प्रिय रहेंगे एवं आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य तथा स्नेह का भाव विद्यमान रहेंगे। जीवन में आपकी उन्नति एवं समृद्धि के लिए सदैव आपको अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करती रहेंगी। साथ ही उन्हीं के सहयोग से आप अपने आय साधनों की वृद्धि करने में सफल हो सकेंगे। इस प्रकार जीवन के समस्त महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपको माता का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही मातृपक्ष से भी आपको नित्य धन लाभ होता रहेगा।

आपके मन में भी उनके प्रति हार्दिक श्रद्धा का भाव रहेगा तथा उनकी आज्ञा पालन करना एवं उनकी सेवा करना आप अपना प्रिय कर्तव्य समझेंगे। आपके परस्पर संबंध अत्यन्त ही स्नेहपूर्ण रहेंगे एवं उनमें मतभेदों का प्रायः अभाव ही रहेगा। इस प्रकार आप परस्पर एक दूसरे के लिए शुभ रहेंगे।

मंगल

ग्यारवें भाव में मंगल हो तो जातक धैर्यवान्, न्यायवान्, प्रवासी, साहसी, लाभ करने वाला, कोधी, झगड़ालू, दम्भी एवं कटुभाषी होता है।

तुला राशि में मंगल हो तो जातक प्रवासी, वक्ता, कामी, परधनहारी, उच्चाकांक्षी, लड़ाकू, कृपालु एवं परस्त्रियों की ओर झुकाव होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की वे अनुभूति करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में अवसरानुकूल आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप आय के साधनों की वृद्धि करने में भी उनसे सहायता अर्जित करेंगे। आप को सुख दुःख में उनसे पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा वे आप पर विश्वास करेंगे।

आप भी हृदय से उनके प्रति सम्मान का भाव रखेंगे तथा समयानुसार उनको आर्थिक तथा अन्य क्षेत्रों में सहायता प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही उनकी आय की वृद्धि में भी आप वांछित सहयोग देंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर ही रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह स्थाई रहेगी एवं कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

बुध

दशमभाव में बुध हो तो जातक सत्यवादी, मनस्वी, व्यवहार कुशल, लोकमान्य, विद्वान्, लेखक, कवि जमींदार, मातृ-पितृ भक्त, राजमान्य, न्यायी एवं भाग्यवान् होता है।

कन्या राशि में बुध हो तो जातक वक्ता, कवि, साहित्यिक, लेखक, सम्पादक, ज्योतिषी, खगोलशास्त्री, गणितज्ञ, अध्यापक, उदार, सुखी एवं अच्छा चरित्र वाला होता है।

गुरु

सप्तमभाव में गुरु हो तो जातक सुन्दर, धैर्यवान्, भाग्यवान्, प्रवासी, सन्तोषी, स्त्रीप्रेमी, परस्त्रीरत, ज्योतिषी, नम्र, विद्वान् वक्ता एवं प्रधान होता है।

मिथुन राशि में गुरु हो तो जातक योग्य वक्ता, सुगठित शरीर, लम्बाकद, उदार, विद्वान्, कई भाषाओं का जानने वाला, अनायास धनप्राप्त करने वाला, लोकमान्य, लेखक एवं व्यवहार कुशल होता है।

शुक्र

नवम भाव में शुक्र हो तो जातक धर्मात्मा, राजप्रिय, पवित्रतीर्थ यात्राओं का कर्ता,



FUTUREPOINT
Astro Solutions



दयालु, प्रेमी, गृहसुखी, गुणी, चतुर एवं आस्तिक होता है।

सिंह राशि में शुक्र हो तो जातक, अल्पसुखी उपकारी, चिन्तातुर, शिल्पज्ञ, स्त्रियों के द्वारा धन अर्जित करने वाला, कामुक, आवेशपूर्ण एवं अपने को दूसरों से ऊँचा समझने वाला होता है।

शनि

चतुर्थभाव में शनि हो तो जातक अपयशी, बलहीन, धूर्त, कपटी, शीघ्रकोपी, कृशदेही, उदासीन, वातपित्तयुक्त एवं भाग्यवान् होता है।

मीन राशि में शनि हो तो जातक अविचारी, शिल्पकार हतोत्साही, धनी, प्रसिद्ध, सुखी एवं दूसरों की सहायता करने वाला होता है।

राहु

तृतीय भाव में राहु हो तो जातक योगाभ्यासी, विद्वान्, व्यवसायी, पराक्रमशून्य, दृढ़विवेकी, अरिष्टनाशक, प्रवासी, दीर्घायु एवं बलवान् होता है।

कुम्भ राशि में राहु हो तो जातक विद्वान्, लेखक मितभाषी एवं मितव्ययी होता है।

केतु

नवम भाव में केतु हो तो जातक सुखाभिलाषी, व्यर्थपरिश्रमी अपयशी, दुःखी एवं 48 वर्ष के बाद भाग्योदय होता है।

सिंह राशि में केतु हो तो जातक बहुभाषी, डरपोक, असहिष्णु, सर्पदशन का भय एवं असन्तोषी होता है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



दशा विश्लेषण

महादशा :- राहु
(25/09/2025 - 09/12/2029)

राहु की महादशा 25/09/2025 को आरम्भ और 09/12/2029 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में राहु तृतीय भाव में स्थित है। इस स्थान से राहु की दृष्टि नवम भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 7 वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। मंगल के कारण आपको लाभ, कुछ स्वास्थ्य समस्या और विरोधियों व शत्रुओं का विरोध मिला होगा। राहु की वर्तमान दशा में आपको शत्रुओं पर विजय, सम्पत्ति और सौभाग्य की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपको शक्ति तथा स्फूर्ति मिलेगी। किन्तु, मौसम में परिवर्तन के कारण चर्मरोग, दाहक रोग, स्नायविक दुर्बलता और शारीरिक थकावट हो सकती है। इन मामूली रोगों को दोड़ कर आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति उत्थन्त सुदृढ़ होगी। आपको सम्पत्ति तथा लाभदायक कार्य की प्राप्ति होगी। सट्टे, निवेश में लाभ मिलेगा। नौकरी में भी सुन्दर लाभ मिलेगा। पिता से अथवा परिवार से लाभ मिल सकता है। उच्चाधिकारियों से लाभ की सम्भावना है। जीविका तथा व्यवसाय के लिए तकनीकी और वैज्ञानिक सेवा, राजनीति, कम्प्यूटर विज्ञान, इलेक्ट्रॉनिक, यातायात, कूटनीतिक कार्य आदि का चयन कर सकते हैं। चमड़े के सामान, पत्थर, रत्न, बिजली के उपकरण, दवा, रसायन आदि का व्यापार लाभदायक सिद्ध हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को लाभ, यश और ख्याति की प्राप्ति होगी तथा जीवन-वृत्ति में प्रगति होगी। व्यवसायियों-व्यापारियों को कुछ उतार-चढ़ाव का सामना करना होगा किन्तु वे अपने रास्ते में आनेवाली सभी बाधाओं का नाश करेंगे। आपकी आय तथा लाभ में वृद्धि होगी और दशा की प्रगति के साथ-साथ व्यापार का विस्तार होगा।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

बुध की अन्तर्दशा में आपको जीवन का सुख मिलेगा। आपके निवास में परिवर्तन हो सकता है अथवा आपको एक मकान की प्राप्ति हो सकती है। आप गाड़ी की खरीद या बिक्री कर सकते हैं। जमीन-जायदाद के मामलों में नुकसान से बचने के लिए आपको सावधान रहना होगा। इस दशा के दौरान आपकी अनेक छोटी यात्राएं होंगी। शुक्र की अन्तर्दशा में दूर की यात्राओं की सम्भावना है।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा लाभदायक होगी। आप तेज ओर दृढ़प्रतिज्ञ हैं और सभी परीक्षाओं में सफल होंगे। विज्ञान, दवा, रसायन शास्त्र, इन्जीनियरिंग, सरकारी सेवा तथा यातायात के क्षेत्र में आपकी रुचि होगी।

परिवार :

परिवार के सदस्यों के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपके बच्चों के लिए यह समय लाभदायक और समृद्धि दायक होगा। आपके जीवनसाथी की दूर की यात्रा और समृद्धि तथा सुन्दर भाग्य की प्राप्ति हो सकती है। आपकी माता की यात्रा, व्यय और धार्मिक कार्यों की ओर उनका झुकाव हो सकता है। आपके पिता को साझेदारों, वाणिज्य-व्यापार और यात्रा से लाभ होगा। आपके छोटे भाई-बहनों को सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी और उनका निवेश सफल होगा। उनके साथ मधुर सम्बन्ध बनाए रखने के लिए आपको कुछ प्रयास करना होगा।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के कारण आपकी छोटी यात्रा होगी, सम्बन्धियों से सहायता मिलेगी और आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। गुरु की अन्तर्दशा में जीवन में सफलता मिलेगी। साझेदारों से लाभ होगा और विवाह तथा यात्रा होगी। शनि की अन्तर्दशा के फलस्वरूप परिवर्तन, सौभाग्य की प्राप्ति तथा यात्रा होगी। बुध के कारण यश, ख्याति, सम्पत्ति तथा आनन्द की प्राप्ति होगी। केतु की अन्तर्दशा में कुछ समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। शुक्र की अन्तर्दशा के दौरान सन्तान से सुख, यात्रा तथा सौभाग्य की प्राप्ति होगी। सूर्य की अन्तर्दशा में छोटी यात्रा, शक्ति और सम्बन्धियों से सहायता मिलेगी। चन्द्र की अन्तर्दशा में लाभ तथा जीवन का सुख मिल सकता है। मंगल की अन्तर्दशा के फलस्वरूप कुछ मामूली स्वास्थ्य समस्या और लाभ प्राप्त हो सकता है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



**अंतर्दशा :- राहु - शुक्र
(25/09/2025 - 28/06/2026)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 25/09/2025 को प्रारंभ होकर 09/12/2029 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र अंतर्दशा की अवधि 3 वर्ष होगी जो आपके लिए 25/09/2025 को प्रारंभ होकर 28/06/2026 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में नवम भाव में स्थित है। नवम भाव श्रद्धा, भाग्य, धार्मिक और आध्यात्मिक विचार, अंतर्ज्ञान, भविष्यज्ञान, उपासनास्थल, पिता, धर्मगुरु, लंबी यात्राएं, हवाई यात्रा, उच्च शिक्षा और घुटनों का प्रतिनिधि है। शुक्र शुभ ग्रह है। नवम भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के तृतीय भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके संतुलित विचार होंगे। आपका व्यवहार नीतिपूर्ण और मधुर रहेगा। ज्ञानार्जन उत्तम होगा, प्रसिद्धि बनेंगे, सब सुख उपलब्ध रहेंगे। विपरीत लिंग के व्यक्तियों से कटु संबंध हो सकते हैं, जिस कारण धनहानि हो सकती है।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए :

- लक्ष्मीजी की उपासना करें
- चींटियों को चीनी और आटा खिलाएं
- भोजन के समय पहली रोटी गाय को खिलाएं

**अंतर्दशा :- राहु - सूर्य
(28/06/2026 - 22/05/2027)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 25/09/2025 को प्रारंभ होकर 09/12/2029 को समाप्त होगी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा 10 मास 24 दिन की होगी जो आपके लिए 28/06/2026 को प्रारंभ होकर 22/05/2027 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्री में दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान और जांघों का परिचायक है। सूर्य आत्मा और पिता का कारक है। सूर्य शक्तिशाली ग्रह है। दशम भाव में स्थित होकर सूर्य आपकी कुंडली के चतुर्थ भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

यह अंतर्दशा बहुत शुभ रहेगी। प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी। धनी बनेंगे ; ज्ञानार्जन करेंगे। बुद्धिमत्ता, प्रसिद्धि और वाहन का योग है। विरासत में जायदाद प्राप्त हो सकती है। व्यक्तित्व प्रभावशाली होगा, संगीत में रुचि होगी, लोकप्रियता बढ़ेगी।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए सूर्य वैदिक मंत्र के 7000 जाप करें।

प्रातःकाल सूर्योदय के समय सूर्य नमस्कार करते हुए सूर्य को जल अर्पित करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

महादशा :- गुरु
(09/12/2029 - 09/12/2045)

आपकी कुण्डली में गुरु की महादशा 09/12/2029 को आरम्भ तथा 09/12/2045 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 16 वर्ष है।

आपकी जन्म कुण्डली में गुरु सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव जीवन साथी, व्यवसाय, कोर्ट-कचहरी के मामले, विदेश संबंध तथा विदेशों में अर्जित प्रतिष्ठा का द्योतक है। गुरु स्वभाव से एक शुभ ग्रह है जिसकी सप्तम भाव में स्थिति तथा एकादश, प्रथम और तृतीय भाव पर दृष्टि है। इन भावों पर यह शुभ प्रभाव डाल रहा है। सोलह वर्षों की इस दशा में आपको बहुत ही आनन्द तथा शान्ति की प्राप्ति होगी और आप उन्नति करेंगे।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी गुरु की सप्तम भाव, जो एक केंद्र है, में स्थिति तथा स्वास्थ्य एवं व्यक्तित्व के द्योतक प्रथम भाव पर इसकी दृष्टि के फलस्वरूप आपको किसी भयानक विपत्ति से छुटकारा मिलेगा तथा इस दशा काल में कोई बड़ी स्वास्थ्य समस्या आपको परेशान नहीं कर पाएगी और आपका जीवन सामान्य रहेगा।

अर्थ सम्पत्ति :

गुरु, जो स्वभावतः एक शुभ ग्रह है तथा जो दशम भाव (कर्म भाव) के स्वामी के अतिरिक्त सप्तम भाव का स्वामी होकर सप्तम भाव में स्थित है एवं सप्तम भाव से जिसकी दृष्टि एकादश भाव (आय भाव) पर है, आपको इस दशा काल में चल एवं अचल संपत्ति में बढ़ोतरी करने का सुअवसर प्रदान करेगा तथा आरामदेह और शौकीन वस्तुओं को खरीदने में आपकी अक्षमता को कम करेगा।

व्यवसाय :

सप्तम अर्थात् जीवनसाथी के भाव तथा दशम अर्थात् कर्म भाव के स्वामी गुरु की सप्तम भाव में स्थिति के कारण आपका व्यवसाय उत्तम होगा। आप व्यवसाय में लाभ प्राप्त करेंगे। आपको विदेश यात्रा का अवसर मिलेगा। आप वाक्पटु होंगे और आपको लक्ष्य की प्राप्ति होगी।

पारिवारिक जीवन :

गुरु के सप्तम अर्थात् जीवनसाथी के भाव में स्थित होने के कारण आपके जीवन साथी आपके सहयोगी होंगे और व्यवसाय में आपकी सहायता करेंगे। आपके जीवन साथी का व्यक्तित्व आकर्षक होगा। आपके बच्चे आज्ञाकारी होंगे और आपका पारिवारिक जीवन उन्नतिशील होगा।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

धार्मिक मानसिकता के कारण आप अपना अधिकतर समय शास्त्रों तथा धार्मिक पुस्तकों के अध्ययन में लगाएंगे।

**अंतर्दशा :- गुरु - गुरु
(09/12/2029 - 27/01/2032)**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 09/12/2029 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 1 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 09/12/2029 को प्रारंभ होकर 27/01/2032 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति बुद्धि, उच्चज्ञान, जीवन और धन का कारक है।

इस अवधि में आपको पारिवारिक सुख मिलेगा। विवाह हो सकता है। समाज में प्रतिष्ठा बढ़ेगी; नये मित्र बनेंगे। धन और सम्मान में वृद्धि होगी। कई माध्यमों से धनलाभ होगा। अध्ययन, अध्यापन, लेखन और प्रकाशन के लिए शुभ समय है। ललित कलाओं और नाटक आदि में रुचि हो सकती है। संचार माध्यमों से लाभ हो सकता है। पारंपरिक साहित्य और कला की ओर अधिक झुकाव होगा।

आपके जीवनसाथी भाग्यशाली रहेंगे। आपके पिता की विद्वानों और सत्पुरुषों से मित्रता होगी। उन्हें समाज में सफलता मिलेगी। माता अचल संपत्ति प्राप्त कर सकती हैं; सब सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। उन्हें भूमि और अचल संपत्ति से लाभ हो सकता है। आपके भाई-बहनों के लिए सौभाग्य, उत्तम शिक्षा और समृद्धि का संकेत है।

आपकी संतान की वाक्शक्ति उत्तम होगी। भाषण प्रतियोगिता आदि में भाग ले सकते हैं। अध्ययन, लेखन और ज्ञान-विज्ञान में रुचि हो सकती है। अगर वे कार्यरत हैं तो इच्छाएं पूर्ण होंगी, सफल रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो सफलता प्राप्त करेंगे। व्यापारी तरक्की करेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मामूली व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए पीले वस्त्र, अनाज और हल्दी दान करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions

